International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-05-2026, Accepted: 02-06-2026, Published: 17-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 201-203

मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' में स्त्री–मन, प्रेम और आत्मचेतना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

डॉ. नंदिनी चौबे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी भाषा विभाग, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरू, कर्नाटक, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12167

सारांश
साठोत्तरी हिंदी कहानी ने आधुनिक मनुष्य के मानसिक विखंडन, अकेलेपन, संबंधों की टूटन तथा अस्तित्वगत संकट को केंद्र में स्थापित किया। नई कहानी आंदोलन के अंतर्गत स्त्री केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह एक स्वतंत्र चेतना और संवेदनशील व्यक्तित्व के रूप में उभरकर सामने आई। मन्नू भंडारी इस आंदोलन की ऐसी महत्वपूर्ण कथाकार हैं जिन्होंने आधुनिक स्त्री के अंतर्मन, उसकी भावनात्मक जटिलताओं, प्रेम–द्वंद्व और आत्मचेतना को अत्यंत सूक्ष्मता और मनोवैज्ञानिक गहराई के साथ अभिव्यक्त किया है।
'यही सच है' उनकी सर्वाधिक चर्चित कहानियों में से एक है। यह कहानी केवल त्रिकोणात्मक प्रेम–कथा नहीं, बल्कि आधुनिक स्त्री की मानसिक संरचना, स्मृतियों, असुरक्षाओं, भावनात्मक विखंडन और आत्मपहचान की जटिल प्रक्रिया का कलात्मक दस्तावेज़ है। प्रस्तुत शोध–पत्र में कहानी की नायिका दीपा के माध्यम से स्त्री–मन, प्रेम, स्मृति, अवचेतन, आत्मसंघर्ष तथा आधुनिक स्त्री–चेतना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। साथ ही कहानी के कथानक, प्रतीक–योजना, भाषा–शिल्प तथा नई कहानी आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि पर भी विस्तार से विचार किया गया है।

मूल शब्दः नई कहानी, स्त्री–मन, आत्मचेतना, प्रेम, मनोविश्लेषण, आधुनिक स्त्री, स्मृति, मन्नू भंडारी

साठोत्तरी हिंदी कहानी के परिदृश्य में मन्नू भंडारी का लेखन विशेष महत्व रखता है। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं, स्त्री के आंतरिक द्वंद्व, संबंधों की टूटन तथा मनुष्य की मानसिक विखंडनशीलता को अत्यंत सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। मन्नू भंडारी की रचनाएँ केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि वे व्यक्ति के अंतर्मन में चलने वाले सूक्ष्म भावात्मक संघर्षों को भी उजागर करती हैं। उनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की बेचैनी, अकेलापन, भावनात्मक असुरक्षा तथा बदलते मानवीय संबंधों की गहरी पहचान दिखाई देती है। विशेष रूप से उन्होंने स्त्री–जीवन की उन मानसिक परतों को अभिव्यक्ति दी है जिन्हें लम्बे समय तक हिंदी साहित्य में अपेक्षित गंभीरता नहीं मिली थी।
'यही सच है' नई कहानी आंदोलन की प्रसिद्ध और बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी पर प्रसिद्ध निर्देशक बासु भट्टाचार्य ने "रजनीगंधा" फिल्म का निर्माण किया, जिसे दर्शकों और समीक्षकों दोनों की अत्यधिक सराहना प्राप्त हुई। यह कहानी केवल साहित्यिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि भारतीय मध्यवर्गीय समाज की बदलती हुई भावनात्मक संरचना को समझने के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती है। मन्नू भंडारी ने जिस तीक्ष्णता और यथार्थबोध के साथ "महाभोज" जैसी कृतियों में अपने समय के राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को चित्रित किया है, उसी संवेदनात्मक गहराई के साथ "आपका बंटी" तथा "यही सच है" जैसी रचनाओं में शहरी मध्यवर्गीय जीवन, पारिवारिक संबंधों की टूटन, भावनात्मक असुरक्षा तथा आधुनिक व्यक्ति की मानसिक उलझनों को अभिव्यक्ति दी है।
मन्नू भंडारी का कथा–साहित्य इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि उसमें स्त्री केवल करुणा या त्याग की प्रतिमा बनकर उपस्थित नहीं होती, बल्कि वह एक स्वतंत्र चेतना, विचारशील व्यक्तित्व और भावनात्मक अस्तित्व के रूप में सामने आती है। उनकी रचनाओं में स्त्री अपने भीतर के द्वंद्व, असुरक्षाओं, इच्छाओं और आत्मसम्मान के साथ उपस्थित होती है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ केवल सामाजिक दस्तावेज़ नहीं रह जातीं, बल्कि आधुनिक स्त्री–मन के मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार भी बन जाती हैं।
साठोत्तरी हिंदी कहानी के पटल पर मन्नू भंडारी का लेखन स्त्री के आंतरिक जगत और उसकी मनोवैज्ञानिक परतों को उद्घाटित करने का कार्य करता है। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'यही सच है' पारंपरिक प्रेम की सीमाओं को तोड़कर आधुनिक नारी के मन के द्वंद्व, प्रेम की तरलता और उसकी उभरती आत्मचेतना का अत्यंत सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह कहानी इस बात की पड़ताल करती है कि स्त्री का प्रेम केवल भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि उसके अस्तित्व, आत्मसम्मान और पहचान की खोज से जुड़ी हुई जटिल प्रक्रिया है। कहानी की नायिका दीपा केवल दो पुरुषों के बीच उलझी हुई स्त्री नहीं है, बल्कि वह आधुनिक मनुष्य की उस मानसिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ स्मृतियाँ, भावनाएँ, असुरक्षाएँ और आत्मचेतना निरंतर एक–दूसरे से टकराती रहती हैं।
नई कहानी आंदोलन ने व्यक्ति के बाहरी संघर्षों की अपेक्षा उसके भीतर चलने वाले मानसिक संघर्षों को अधिक महत्व दिया। इस आंदोलन के कथाकारों ने यह अनुभव किया कि आधुनिक जीवन में मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष समाज से अधिक स्वयं अपने भीतर से है। नामवर सिंह के अनुसार – "नई कहानी ने मनुष्य के बाह्य जीवन की अपेक्षा उसके भीतर घटित होने वाले मानसिक संघर्षों को अधिक महत्व दिया।" [1]
वस्तुतः 'यही सच है' आधुनिक मनुष्य के इसी मानसिक संघर्ष और भावात्मक विखंडन की कहानी है। इस कहानी में प्रेम किसी स्थायी और आदर्श भाव के रूप में उपस्थित नहीं होता, बल्कि वह स्मृतियों, परिस्थितियों, असुरक्षाओं और मानसिक अवस्थाओं के साथ बदलता रहता है। दीपा का चरित्र इस बात को स्पष्ट करता है कि आधुनिक स्त्री का जीवन केवल सामाजिक बंधनों से नहीं, बल्कि उसके भीतर चलने वाले भावात्मक द्वंद्वों से भी निर्मित होता है।
कहानी का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें प्रेम को नैतिकता या आदर्शवाद की दृष्टि से नहीं देखा गया, बल्कि मनुष्य की मनोवैज्ञानिक संरचना के संदर्भ में समझने का प्रयास

किया गया है। दीपा कभी संजय के प्रेम को सत्य मानती है तो कभी निशीथ की स्मृतियों में डूब जाती है। यह स्थिति आधुनिक मनुष्य की भावनात्मक अस्थिरता और मानसिक विखंडन का प्रतीक है।
इसी दृष्टि से 'यही सच है' केवल प्रेम–कथा नहीं रह जाती, बल्कि आधुनिक स्त्री के अंतर्मन, उसकी स्मृतियों, उसके आत्मसंघर्ष और उसकी बदलती हुई मानसिक अवस्थाओं का अत्यंत महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक दस्तावेज़ बन जाती है।
वस्तुतः 'यही सच है' आधुनिक मनुष्य के इसी मानसिक संघर्ष और भावात्मक विखंडन की कहानी है।

कहानी का कथानक और मानसिक संरचना

'यही सच है' दीपा नामक युवती के जीवन की कहानी है, जो उसके भावनात्मक अनुभवों और मानसिक संघर्षों के माध्यम से विकसित होती है। कहानी का कथानक अत्यंत सरल प्रतीत होता है, किंतु उसकी मानसिक संरचना अत्यंत जटिल और बहुआयामी है।
दीपा अपने माता–पिता के साथ पटना में रहती थी। युवावस्था में उसे निशीथ से प्रेम हो जाता है। अठारह वर्ष की आयु में किया गया यह प्रेम उसके जीवन का सबसे गहरा भावनात्मक अनुभव बन जाता है। किंतु परिस्थितियाँ ऐसी बनती हैं कि निशीथ उसे छोड़ देता है। इसी बीच उसके पिता की मृत्यु हो जाती है और परिवार में भी उसे अपेक्षित सहारा नहीं मिलता। परिणामस्वरूप वह अकेली होकर कानपुर चली आती है और अपने शोधकार्य में स्वयं को व्यस्त कर लेती है।
कानपुर में उसकी मुलाकात संजय से होती है। संजय का स्वभाव सहज, आत्मीय और व्यवहारिक है। धीरे–धीरे यह परिचय प्रेम में बदल जाता है। दीपा को लगता है कि अब वह निशीथ को भूल चुकी है। वह अपने अतीत को समाप्त मानकर संजय के साथ नए जीवन की कल्पना करने लगती है।
इसी बीच नौकरी के एक इंटरव्यू के सिलसिले में उसे कलकत्ता जाना पड़ता है। कुछ कारणों से संजय उसके साथ नहीं जा पाता और दीपा को अकेले जाना पड़ता है। कलकत्ता में संयोगवश उसकी भेंट पुनः निशीथ से हो जाती है। निशीथ उसके इंटरव्यू में सहायता करता है और उसके प्रति आत्मीय व्यवहार करता है। यही पुनर्मिलन दीपा के भीतर दबे हुए अतीत को पुनः जीवित कर देता है।
डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं – "मानव–मन का अवचेतन भाग उसकी चेतन क्रियाओं को भीतर–ही–भीतर संचालित करता रहता है।" [2]
दीपा के साथ भी यही होता है। वह बार–बार स्वयं को समझाने का प्रयास करती है कि उसका वर्तमान संजय है, किंतु उसका अवचेतन निशीथ की स्मृतियों की ओर लौटता रहता है। वह चाहकर भी अपने भीतर उठ रहे भावनात्मक आकर्षण को नियंत्रित नहीं कर पाती।

प्रेम का द्वंद्व और स्त्री–मन की जटिलता

'यही सच है' का केंद्रीय तत्व प्रेम का मनोवैज्ञानिक द्वंद्व है। कहानी में प्रेम को स्थिर और शाश्वत भावना के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया, बल्कि उसे मनुष्य की बदलती मनःस्थितियों के साथ जोड़ा गया है।
दीपा का मन दो दिशाओं में विभाजित दिखाई देता है। एक ओर संजय है, जो उसे सुरक्षा, विश्वास और स्थिरता देता है; दूसरी ओर निशीथ है, जो उसके जीवन के रोमानी और भावनात्मक पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है।
रामविलास शर्मा के अनुसार – "नई कहानी मध्यवर्गीय जीवन की टूटन, तनाव और मानसिक कुंठाओं की कहानी है।" [3]
दीपा की मानसिक स्थिति इसी टूटन और तनाव का परिणाम है। वह अपने भीतर चल रहे भावनात्मक संघर्ष से स्वयं भी परेशान है। वह स्वयं को बार–बार समझाती है कि वह निशीथ से घृणा करती है, किंतु उसका मन उसी की ओर आकर्षित होता रहता है।

एक स्थान पर वह संजय से कहती है –
"विश्वास करो संजय, तुम्हारा मेरा प्यार ही सच है, निशीथ का प्यार तो मात्र छल था, भ्रम था, झूठ था।"

यह कथन उसके वर्तमान मानसिक विश्वास को प्रकट करता है। किंतु जैसे–जैसे कहानी आगे बढ़ती है, वही दीपा निशीथ की उपस्थिति में भावनात्मक रूप से विचलित होने लगती है।
वह स्वयं सोचती है –

"मैं उसे बता दूँगी कि जल्दी ही मैं संजय से विवाह करने वाली हूँ... यह भी बता दूँगी कि मैं उससे घृणा करती हूँ... किंतु जाने क्यों मेरे मन में यह बात भी उठ रही है कि तीन साल हो गए, अभी तक निशीथ ने विवाह क्यों नहीं किया?"

यहाँ स्पष्ट दिखाई देता है कि प्रेम और घृणा जैसे विरोधी भाव एक ही व्यक्ति के भीतर एक साथ सक्रिय हो सकते हैं। यही कहानी की मनोवैज्ञानिक गहराई है।

स्मृति, अवचेतन और भावनात्मक असुरक्षा

कहानी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष स्मृति का मनोविज्ञान है। निशीथ से मिलते ही दीपा का अतीत पुनः जीवित हो उठता है। वह उन क्षणों को याद करने लगती है जिन्हें वह पीछे छोड़ चुकी थी।
निर्मल वर्मा के अनुसार – "स्मृतियाँ केवल अतीत नहीं होतीं, वे वर्तमान जीवन को भी लगातार प्रभावित करती रहती हैं।" [4]
दीपा का वर्तमान भी उसकी स्मृतियों से नियंत्रित होता है। निशीथ के साथ बिताए गए क्षण उसके भीतर रोमानी संवेदनाओं को पुनः जागृत कर देते हैं।

एक स्थान पर दीपा स्वयं स्वीकार करती है –
"मैं जानती हूँ कि जब निशीथ बगल में बैठा हो, उस समय ऐसी इच्छा करना कितना अनुचित है, पर मैं क्या करूँ? जितनी तेजी से टैक्सी चल रही है, उतनी ही तेजी से मैं भी बहती जा रही हूँ।"

यह कथन उसकी भावनात्मक असहायता को व्यक्त करता है।
मन्नू भंडारी यहाँ यह स्पष्ट करती हैं कि मनुष्य का मन केवल तर्क से संचालित नहीं होता। स्मृतियाँ, स्पर्श, अकेलापन और भावनात्मक रिक्तता व्यक्ति के निर्णयों को प्रभावित करते हैं।
डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं – "मनुष्य की दबी हुई भावनाएँ अवसर मिलने पर पुनः उभर आती हैं और उसके व्यवहार को प्रभावित करती हैं।" [5]
निशीथ के प्रति दीपा का आकर्षण इसी अवचेतन की प्रतिक्रिया है।

प्रेम और सुरक्षा का द्वंद्व

कहानी में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी उठाया गया है कि जीवन में प्रेम अधिक महत्वपूर्ण है या सुरक्षा?
संजय दीपा को स्थिरता और भरोसा देता है। उसके साथ दीपा का संबंध सहज और व्यवहारिक है। दूसरी ओर निशीथ के साथ उसका संबंध रोमानी और भावनात्मक तीव्रता से भरा हुआ है।

दीपा को निशीथ के साथ बिताए गए वे क्षण याद आते हैं –
"घंटों समीप बैठे मौन भाव से एक–दूसरे को निहारा करते थे... बिना स्पर्श किए भी एक विचित्र मादकता तन–मन को विभोर करती रहती थी।"

इसके विपरीत संजय के साथ उसका संबंध अधिक यथार्थवादी है –
"चाँदनी रात में भी हम थीसिस और ऑफिस की बातें करने लगते हैं... पर इसका यह अर्थ तो नहीं कि हम प्रेम नहीं करते।"

इन दोनों स्थितियों के माध्यम से मन्नू भंडारी आधुनिक प्रेम की दो भिन्न मानसिक अवस्थाओं को प्रस्तुत करती हैं – एक रोमानी प्रेम और दूसरा व्यवहारिक प्रेम।

स्त्री–चेतना और आत्मविश्लेषण

दीपा का चरित्र आधुनिक स्त्री की आत्मचेतना का प्रतीक है। वह केवल भावनाओं में बह जाने वाली स्त्री नहीं है, बल्कि स्वयं का निरंतर विश्लेषण करने वाली चेतना भी है।
प्रभा खेतान लिखती हैं – "स्त्री की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह स्वयं को दूसरों की दृष्टि से देखने लगती है।" [6]
दीपा इस समस्या से जूझती हुई दिखाई देती है। वह स्वयं से प्रश्न करती है कि उसका वास्तविक प्रेम कौन है। वह यह समझने का प्रयास करती है कि क्या उसका आकर्षण केवल स्मृति का प्रभाव है या वास्तव में उसके मन का सत्य।

एक क्षण ऐसा आता है जब निशीथ उसके हाथ पर हाथ रख देता है और दीपा को लगता है–
"यदि तुम मेरे हो तो मैं भी तुम्हारी हूँ... यह स्पर्श, यह सुख, यही सत्य है, बाकी सब झूठ है।"

किंतु कहानी के अंत में जब निशीथ का पत्र अत्यंत औपचारिक और ठंडा निकलता है, तब दीपा पुनः असुरक्षित हो उठती है। उसी समय संजय उसके सामने उपस्थित होता है और वह भावुक होकर उससे लिपट जाती है।
यहीं कहानी का सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक सत्य सामने आता है – मनुष्य का सत्य स्थिर नहीं होता; परिस्थितियाँ और मानसिक अवस्थाएँ उसे बदलती रहती हैं।

भाषा, शिल्प और प्रतीक योजना

मन्नू भंडारी की भाषा अत्यंत सहज, संवेदनशील और मनोवैज्ञानिक है। उन्होंने अत्यंत साधारण शब्दों में गहरी भावनात्मक स्थितियों को व्यक्त किया है। कहानी में आत्मसंवाद का प्रयोग विशेष रूप से प्रभावशाली है।
संवाद छोटे हैं, किंतु उनके भीतर गहरा भावबोध है। विशेष रूप से मौन का प्रयोग उल्लेखनीय है। निशीथ का मौन ही उसके प्रेम की अभिव्यक्ति बन जाता है।
सुरेश गौतम के अनुसार – "नई कहानी की भाषा बाहरी अलंकरण से अधिक मानसिक संवेदनाओं की भाषा है।" [7]
कहानी में रजनीगंधा के फूल अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में उभरते हैं। ये फूल प्रेम, स्मृति, आत्मीयता और भावनात्मक सुरक्षा के प्रतीक हैं। संजय जब–जब रजनीगंधा के फूल लेकर आता है, दीपा को उसके प्रेम की स्थिरता का अनुभव होता है।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

कुछ आलोचक दीपा को अत्यधिक भावुक मानते हैं, किंतु वस्तुतः यही उसकी मानवीयता है। आधुनिक जीवन में संबंधों की जटिलता और मानसिक विखंडन व्यक्ति को स्थिर नहीं रहने देते।
शिवकुमार मिश्र के अनुसार – "नई कहानी का मूल स्वर व्यक्ति की आंतरिक बेचैनी और संबंधों की टूटन है।" [8]
यही बेचैनी दीपा के चरित्र में स्पष्ट दिखाई देती है। कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी नैतिक निर्णय पर नहीं पहुँचती। यह पाठक को मनुष्य की मानसिक जटिलता के सामने खड़ा कर देती है।

गोपाल राय लिखते हैं – "नई कहानी ने मनुष्य के मानसिक यथार्थ को जिस गहराई से अभिव्यक्त किया, वह हिंदी कथा–साहित्य में एक नई उपलब्धि थी।" [9]
'यही सच है' इसी उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करने वाली कहानी है। यह आधुनिक स्त्री की भावनात्मक विडंबनाओं को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष

'यही सच है' आधुनिक हिंदी कहानी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह कहानी आधुनिक स्त्री–मन की जटिलता, प्रेम की अस्थिरता, स्मृति के प्रभाव और आत्मचेतना के संघर्ष का अत्यंत सूक्ष्म एवं प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत करती है।
मन्नू भंडारी ने दीपा के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि मनुष्य का भावनात्मक जीवन सीधी रेखा में नहीं चलता। प्रेम, घृणा, स्मृति, सुरक्षा, आकर्षण और अकेलापन – ये सभी भाव एक साथ मनुष्य के भीतर सक्रिय रहते हैं।
राजेन्द्र यादव के अनुसार – "नई कहानी का लेखक संबंधों की टूटन, अकेलेपन और व्यक्ति की मानसिक घुटन को अभिव्यक्ति देता है।" [10]
'यही सच है' इसी मानसिक घुटन और भावात्मक विखंडन की कहानी है। यही कारण है कि यह कहानी केवल एक प्रेम–कथा नहीं रह जाती, बल्कि आधुनिक स्त्री की आत्मचेतना और मानसिक संघर्ष का कालजयी दस्तावेज़ बन जाती है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, नामवर, कहानी : नई कहानी, नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2006
2. नगेन्द्र, डॉ. साहित्य और मनोविश्लेषण, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2003
3. शर्मा, रामविलास, नई कविता और अस्तित्ववाद, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1997
4. वर्मा, निर्मल, कला का जोखिम. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2001
5. नगेन्द्र, डॉ. साहित्य का मनोविज्ञान, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2004
6. खेतान, प्रभा, स्त्री उपेक्षिता, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2003
7. गौतम, सुरेश, नई कहानी : प्रकृति और पाठ, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2007
8. मिश्र, शिवकुमार, नई कहानी की भूमिका, इलाहाबाद: किताब महल, 1998
9. राय, गोपाल, हिंदी कहानी का विकास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005
10. यादव, राजेन्द्र, कहानी : स्वरूप और संवेदना, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2002